Date ___/___/_____

संसाधन संरक्षण

इसका तात्पर्य संसाधन द्वारा मानवीय अवश्यकताओ की पुर्ति के साथ उसका सार्थक उपयोग होता है। इनको मिट्टी वन खनिज ऊर्जा आदि संसाधनो की अनेक प्रकार से होने वाली हानियो से रक्षा करना तथा उनके विनाश की क्षति पुर्ति के लिए उपाय करना ही संसाधनो का संरक्षण होता है।

प्राकृतिक संसाधनो का कम से कम मात्रा मे अधिकतम उपयोग को संसाधन संरक्षण कहते है विश्व के विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के विकास के साथ साथ संसाधनो के संरक्षण की भावना को बल मिला है। विश्व के सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रो मे क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए इसका कारण जनसंख्या मे तीव्र गति से वृद्धि औद्योगिक एवं तकनीकी क्रान्ति के फलस्वरूप कल कारखानो मे उत्पादन मे भारी वृद्धि तथा जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण है। वर्तमान मे यह धारणा प्रबल हो रही है कि निश्चित सीमा के उपरान्त संसाधनो का तीव्र से अधिकतम उपयोग मानव के हित मे नही होगा यह अहित विशेष रूप से अपरिवर्तनीय संसाधनो के सन्दर्भ मे होगा उनका क्षेत्र काल एवं अवश्यकताओ के अनुसार समुचित उपयोग किये गये जिसमे भावी पिढीयो के संसाधन सतत मिलता रहे। दूसरे शब्दो मे संसाधनो की विवेकपूर्ण उपयोग मानव के सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक कल्याण के कार्यो को किया जा सके

मीरा मेमो... महाविद्यालय
शिक्षण ... संस्थान
... शाखा, बलिया

एल० सी० ग्रे के मतानुसार - संरक्षण से तात्पर्य वर्तमान तथा भविष्य की बीच किसी संसाधन के उपयोग मे जाने का संघर्ष है।

संसाधन संरक्षण के सिद्धान्त

(1) संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग संरक्षण है। अविवेकपूर्ण उपयोग से अनेक संसाधन समाप्त हो चले है। फलत: भविष्य मे इनके उपयोग से मनुष्य वंचित हो सकता है। जैसे - वन - मिट्टी

(2) संसाधनो की क्षतिपूर्ति संरक्षण है। मानव संसाधन द्वारा प्रयुक्त के लिए उनकी क्षतिपूर्ति भी आवश्यक होती है। वनो के उपयोग के साथ वृक्षारोपण आवश्यक होता है। मिट्टी की उपयोग के साथ अयस्क की कम हानी होती है।

(3) प्राविधिकी के विकास द्वारा संसाधनो की कम मात्रा के उपयोग से अधिकाधिक आवश्यका की अपूर्ति संरक्षण है। लौह अयस्क के गलने की नवीन विधी के साथ कोयला तथा अयस्क की कम हानी होतीहै

(4) संसाधनो के भण्डार एवं उपयोगिता के दृष्टि मे रखकर उनके उपयोग का नियोजन संरक्षण है समस्त संसाधनो का उपयोग भविष्य को ध्यान मे रखकर नियोजित करना चाहिए

(5) कम आर्थिक मुल्य वाले संसाधनो का नियोजित ढग से महत्व पूर्ण संसाधनो की भांति उपयो करना

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/__

भौगोलिक परिस्थितियाँ

गेहूँ

गेहूँ विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान कृषि फसल है। विश्व की 40% से भी अधिक जनसंख्या एवं सर्वप्रमुख खाद्यान्न गेहूँ है। गेहूँ में प्रोटीन - कार्बोहाईड्रेट तथा विटामिन पर्याप्त में मिलता है। गेहूँ में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट मध्य अक्षांशीय घास क्षेत्रों का समशीतोष्ण जलवायु की फसल है। लेकिन इसकी कृषि भूमध्यसागरीय चीनतुल्य सवाना उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी तथा अर्द्धशुष्क जलवायु मे भी की जाती है। वर्तमान में गेहूँ उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र उत्तरी गोलार्द्ध में 30' से 55' उत्तरी अक्षांशों के मध्य तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में 20' से 40' दक्षिणी अक्षांशों के मध्य होती है।

विश्व मे उत्पादन गेहूँ की प्रमुख किस्मे

गेहूँ की कृषि को मौसम के अधार पर निम्नलिखित दो वर्गों मे रखा जाता है।

① शीतकालीन गेहूँ — शीतकालीन गेहूँ की कृषि मध्य अक्षांशीय भागों मे समशीतोष्ण एवं उपोष्ण जलवायु वाले भागों मे की जाती है यह गेहूँ शीतकालीन के प्रारम्भ मे बोया जाता है तथा ग्रीष्म काल मे प्रारम्भ होने से पूर्व ही काट लिया जाता है। विश्व मे उत्पादित कुल गेहूँ का लगभग 80% गेहूँ शीतकालीन ही होता है। एशिया मे शीतकालीन गेहूँ चीन भारत तुर्की पाकिस्तान बंगलादेश आदि देशो मे प्रमुख रूप से उगाया जाता है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __ / __ / __

(2) बसन्तकालीन गेहूँ — बसन्त कालीन गेहूँ का कृषि शीत प्रधान जलवायु वाले क्षेत्रो मे की जाती है। यह गेहूँ बसन्त ऋतु मे बोया जाता है तथा ग्रीष्मकाल की समाप्ति पर काट लिया जाता है। विश्व के कुल उत्पादित गेहूँ मे बसन्तकालीन गेहूँ का योग दान लगभग २०% का रहता है।
शीतकालीन एवं बसन्तकालीन दोनो गेहूँ कठोर एवं मुलायम होते है। जबकि मुलायम गेहूँ मे नमी का अंश अपेक्षाकृत अधिक होता है।

गेहूँ उत्पादन के लिए उपयुक्त भौगोलिक दशाएँ —

(1) तापमान — गेहूँ के बोते समय औसत 10° से० वृद्धि के समय 10° से 15° से० तथा काटते समय 15° से २०° से० तापमान होना चाहिए। फसल के पकने के लिए लगभग ९० दिनो तक पालारहित मौसम चमकीली धूप तथा साफ आसमान रहना चाहिए।

(2) वर्षा — गेहूँ कि बोते समय तथा वृद्धि के प्रारम्भिक चरण मे हल्की नमी रहनी चाहिए गेहूँ के कृषि के लिए २5 सेमी से 75 से० मी० के मध्य वार्षिक प्राप्त करने वाले क्षेत्र उपयुक्त माने जाते है। 100 से० मी० से अधिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रो मे गेहूँ की फसल (अधिक वर्षा के कारण नष्ट हो जाती है। विश्व के अधिकांश गेहूँ उत्पादन क्षेत्र 40 सेमी से कम वर्षा प्राप्त करते है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date ___/___/___

मिट्टी – गेहूँ की कृषि के लिए ऐसी भारी दोमट, हल्की चिकनी या चीका प्रधान मिट्टी उपयुक्त होती है। मिट्टी का गहरा तथा जल प्रवेश योग्य होना भी आवश्यक है। मिट्टी में चूना नाइट्रोजन, पोटाश तथा अमोनिया सल्फेट की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता होनी चाहिए

④ धरातल – गेहूँ के लिए हल्के ढाल वाली ऐसी समतल भूमि आदर्श मानी जाती है जिस पर पानी अधिक देर तक इकट्ठा न हो सके साथ ही उस भूमि पर क्षमता से आधुनिक कृषि यन्त्रों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

⑤ श्रम – जिन क्षेत्रों में गेहूँ की कृषि आधुनिक मशीनों की सहायता से कम की जाती है। वहा अधिक श्रमिकों की अवश्यकताएँ नहीं होती है। लेकिन गरीब देशों मे एक बहुत बड़े भाग पर मानवीय एवं पशु श्रम पर अधारित गेहूँ की कृषि की जाती है। पर्याप्त सस्ते श्रम की अवश्यकता विशेष रूप से गेहूँ की बोने तथा काटने के समय पड़ती है।

विश्व के प्रमुख गेहूँ उत्पादन देश

① चीन – सन् २००१ आँकड़ो के अनुसार चीन मे विश्व का लगभग २१% गेहूँ उत्पादित किया गया। विश्व के गेहूँ उत्पादक राष्ट्रो मे चीन का प्रथम स्थान है। सन् २००१ मे चीन मे गेहूँ की औसत प्रति हेक्टेयर उपज 4643 कि रही चीन मे गेहूँ का उत्पादन प्रमुख रूप से उत्तरी चीन के वृहद मैदानी भाग मे स्थित ह्वांगहो नदी घाटी की हो नदी घाटी मंचूरिया के मैदानी भाग तथा शांतुंग प्राय:द्वीप से प्राप्त होता है

Saathi

Date ___/___/___

(2) भारत – विश्व मे गेहूँ उत्पादन राष्ट्रो मे भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है सन् 2010 मे भारत मे विश्व का लगभग 14.2% गेहूँ उत्पादित किया गया था तथा प्रति हेक्टेयर औसत उपज 3216 किग्रा. रही देश का लगभग 14.2 90% गेहूँ उत्पादन देश के छः राज्यो उत्तर प्रदेश पंजाब हरियाणा राजस्थान मध्य प्रदेश तथा बिहार से प्राप्त होता है। जहा देश का लगभग 90 प्रतिशत गेहूँ उत्पादित किया जाता है। यह पेटी पंजाब हरियाणा राजस्थान पुर्वी राजस्थान उत्तर प्रदेश तथा उत्तरी मध्य प्रदेश से लेकर पुर्वी मे गंगा यमुना के मैदानी भाग मे शैने, शैने: सकीर्ण होते हुए भी बिहार के भागलपुर जिले तक स्थित है।

(3) संयुक्त राज्य अमेरिका – विश्व के गेहूँ उत्पादक राष्ट्रो मे संयुक्त राज्य अमेरिका का स्थान चीन तथा भारत के बाद तीसरा है। 2010 मे इसमे विश्व का 12.13% गेहूँ उत्पादित किया गया जबकि गेहूँ की औसत प्रति हेक्टेयर उपज 3319 किग्रा. रही।

लेकिन देश के सर्वप्रमुख गेहूँ उत्पादक राज्यो मे कन्सास उत्तरी डेकोटा ओकलाहमा मोण्टाना टेक्सास वाशिंगटन दक्षिणी डेकोटा तथा मिनिसोटा है। जबकि कोलोरेडो इडाहो तथा नेब्रास्का अन्य गेहूँ उत्पादक राज्य है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date ___/___/___

उत्तरी अमेरिका मे यह गेहूं का सर्वप्रथम उत्पादक क्षेत्र होने के कारण विश्व की रोटी की टोकरी कहलाता है।

(4) फ्रांस — विश्व के गेहूं उत्पादक राष्ट्रो के फ्रांस का चौथा स्थान है। सन २०१० मे यहा विश्व का लगभग 8% प्रतिशत गेहूं उत्पादित कियागया जबकि औसत प्रति हेक्टेयर उपज 82!! किग्रा० रही। यह राष्ट्र यूरोप मे देशो मे सबसेअधिक गेहूँ उत्पादित करने वाला राष्ट्र पेरिस बेसेन पिकार्डी नारमड़ी तथा निचली लोयर फ्रांस के सर्वप्रमुख गेहूँ उत्पादक है।

(5) पुर्व सोवियत संघ के देश (रूस यूक्रेन तथा कजाखिस्तान

सन २०१० मे पूर्व सोवियत संघ के तीन देशो—रुस यूक्रेन तथा काजाखिस्तान ने सम्मिलित रुप से विश्व का लगभग 14% गेहूं उत्पादित किया जिसमे रुस द्वारा 7.16% यूक्रेन द्वारा 3.19 प्रतिशत तथा कजाखस्तान द्वारा 2.14% गेहूं उत्पादित किया गया यूक्रेन पुर्व सोवियत संघ का प्रमुख गेहूँ उत्पादक राष्ट्र है। जिसे सोवियत संघ के विघटन के पुर्व सोवियत संघ की रोटी की डलिया कहाजाताहै

(6) कनाडा — विश्व की गेहूं उत्पादक राष्ट्रो मे कनाडा का वर्तमान मे छठवा स्थान है। सन २०१० मे यहा विश्व का लगभग 5.1% गेहूं उत्पादित किया गया तथा प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 3361 कि० रहा। कनाडा मे प्रेयरी प्रदेश पर विस्तृत सस्केचवान, मैनीटोबा, अलबर्टा तथा कोलम्बिया प्रान्तो मे वसन्तकालीन गेहूँ प्रमुख रुप से उत्पादित किया जाता है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ...

17/9/2020